

त्यमप्रचोदित एव वा । कुर्यादध्ययने यत्नम् M. 2, 191. ततः प्रचोदयामास
 सविज्ञानान् — न प्रपेदुश्च ते क्रतुम् MBu. 1, 8102. BENF. Chr. 26, 69. R.
 5, 7, 27. प्रचोदितो ऽपि रात्र्याय नैच्छद्वाप्यम् obgleich aufgefodert die
 Herrschaft zu übernehmen 1, 1, 34. यथा तु मे न नश्येत तपस्तन्मो प्रचोदय
 fordere mich zu Etwas auf, fordere von mir MBu. 3, 8591. — 4) auf-
 fordernd verlangen: शोकारम् ऽङ्कम् GRUJ. 4, 8. — 5) festsetzen, bestim-
 men: न युज्यते ऽत्रान्यथः प्रचोदितात् Buāg. P. 4, 19, 27. — 6) verkün-
 den, ankündigen: वेदांते परमं गुह्यं पुराकल्पे प्रचोदितम् ऽवैतत् UP. 6,
 22. गुणान्सर्वान्प्रचोदयन् M. 3, 228. भिन्नो पुरस्तादप्रचोदिताम् 4, 248. —
 7) sich sputen: प्र राधसा (राधांसि SV.) चोदयाते मङ्गलम् RV. 8, 24, 13.

— अभिप्र त्रेiben, antreiben: दैवेनाभिप्रचोदितः MBu. 1, 575. 3, 14543.
 Jmd zu Etwas verleiten: वृत्तसादिन्या कैत्रेय्याभिप्रचोदितः R. 2, 34, 37.

— संप्र in schnelle Bewegung versetzen, antreiben, treiben: प्राप्तपट्टि-
 शनिभिर्वाञ्छुभिः संप्रचोदितान् MBu. 7, 559. ततो मातलिना तूष्णीं कृपा-
 स्ते संप्रचोदिताः 3, 12109. विधिना संप्रचोदितः 1, 4875. auffordern: रा-
 धसंप्रचोदितावगायतां काव्यमिदम् R. 1, 4, 32.

— प्रति 1) antreiben: (अश्वान्) प्रत्यचोदयत् R. 3, 28, 40. सारथिम् 33,
 24. — 2) sich gegen Jmd (acc.) wenden, sich an Jmd machen (in feind-
 licher Absicht): न च मो रत्नसो राजा रावणः प्रतिचोदितः । हरन्दशर-
 त्रेर्भार्याम् R. 4, 61, 48.

— सम् 1) in schnelle Bewegung versetzen, antreiben, treiben, Etwas
 betreiben: महास्त्रं समचोदयम् MBu. 3, 12238. कृयान् 756. 2850. R. 3, 31, 3.
 संचोदयामास शीघ्रे याद्वीति सारथिम् 2, 40, 40. 3, 33, 27. 4, 28, 17. कृता-
 तस्य गतिः पुत्र दुर्विभाव्या सदा भुवि । यज्ञो संचोदयति 2, 24, 33. MBu.
 13, 7393. प्रेतकार्याणि सर्वाणि ज्ञातानां समचोदयत् R. 6, 93, 59. anfeuern,
 erregen, anreizen; auffordern, angehen: उवाच चैतान्प्रतिभाष्य शक्र सं-
 चोदयिष्यन्नङ्गपस्यात्तरेण MBu. 5, 513. भगवत्कथायां संचोदितस्तं प्रकृ-
 त्त्विवाहं Buāg. P. 3, 7, 42. संचोदयामास सो ऽर्जुनम् — दर्शयास्त्राणि MBu.
 3, 12292. 16663. 1, 4859. 3, 4935. LA. 48, 3. Buāg. P. 1, 4, 3. — 2) eilig
 herbeischaffen: संचोदय चित्रमर्वाग्रार्थं इन्द्र RV. 1, 9, 5.

— सम (= सम्) in आकर्षणसमचोदितः — वाणैः mit Pfeilen, die man
 vom Ohre an (mit vollkommen gespanntem Bogen) abgeschossen hat
 MBu. 7, 1869. In Betreff von सम = सम् vgl. समगच्छतु HARIV. 14787. स-
 मरञ्जित partic. 11960. 11997. 12180.

चुनन्द m. N. pr. eines Bhikshu LALIT. ed. Calc. 1, 16. चुनन्दन Fouc. 3.

चुन्द s. चुन्द.

चुन्द 1) m. N. pr. eines Schülers Ćākjamuni's VJUTP. 32. BURN. Intr.
 173. Lot. de la b. I. 423. HIOUEN-TSANG I, 133. SCHIEFNER, Lebensb.
 292 (62). — 2) f. ई Kuppelerin H. 333.

1. चुप्, चोपति sich bewegen, sich rühren DuātUP. 11, 9 (मन्द्रायां गतिः,
 शनैर्गतिः). किं स्विज्जातं न चोपति, अण्डं ज्ञातं न चोपति MBu. 3, 10648.
 fg. 17346. fg. — Vgl. गलेचोपक, चोपन.

— प्र s. उपस्वित्रप्रचुपित.

2. चुप्, चुपति berühren DuātUP. 28, 125, v. I. für कुप्.

चुप m. N. pr. eines Mannes gaṇa ग्रन्थादि zu P. 4, 1, 110.

चुपणीका f. Bez. einer Hülse: चुपणीका नामासि TS. 4, 4, 5, 1.

चुवुक n. Kinn: ऽद्वयं ऽपस्त. beim Schol. zu KĀTJ. Ća. 6, 2, 5. Cit. beim
 Sch. zu TS. (bei RÖER 330, 2). St. चुवुक ist ĆATR. 14, 207 wohl चषक

zu lesen. — Vgl. चिवुक, कुवुक.

चुत्र n. Gesicht UP. 2, 29. — Wird von 1. चुम्ब् abgeleitet.

चुमुचुमायन s. चुमुचुमायन.

चुमुरि m. N. pr. eines Feindes oder Dämons, welchen Indra zu
 Gunsten des Dabhiti einschläfert: सस्तो धुनीचुमुरी या कृ सिध्वं RV.
 6, 20, 13. 26, 6. 18, 8. 2, 13, 9. 7, 19, 4. 10, 113, 9.

1. चुम्ब्, चुम्बति küssen DuātUP. 11, 39. (एनाम्) चुचुम्ब शनैर्गण्डे
 HARIV. 8743. नात्रस्माद्युवतो वृद्धं केशेषाकृष्य चुम्बति HIT. 1, 102. 29, 13.
 प्रियामुखम् — चुचुम्ब KUMĀRAS. 3, 38. MEGH. 10. RT. 6, 14. VET. 28, 17.
 RĀGA-TAR. 3, 369. चुम्बन्निवास्येन Buāg. P. 4, 9, 3. Glt. 1, 41, 44. आत्रा-
 मूर्ध्नि वालांश्च चुचुम्बुश्च सुतप्रियाः BHATT. 14, 12. नीतिर्वारविलासिनी स-
 ततं वनःस्थले संस्थिता वक्त्रं चुम्बतु मन्त्रिणाम् HIT. IV, 130. med. चुम्बसे
 PĀNĀT. IV, 7. चुम्ब्यमान DhĀRTAS. 66, 4. चुम्बित ĆĀK. 73. SĀH. D. 7, 6.
 küssen so v. a. mit dem Munde berühren: चुचुम्बतुः शङ्खचैरा नृणां वीरा
 वराननाभ्यां युगपच्च दध्मतुः MBu. 8, 4954. — caus. küssen lassen: अश्वयं
 हि मदिकृष्या विना — दशनच्छद् एष चुम्बयितुम् DAČAK. 49, 9. Nach
 DuātUP. 32, 91, v. I. auch = simpl.

— परि abküssen: परिचुम्बति संविश्य धमश्चूतमञ्जरीम् । नवसंगमसं-
 ष्टः कामो प्रणयिनीमिव ॥ R. 3, 79, 17. पत्युर्मुखम् । विप्रव्यं परिचुम्ब्य
 AMAR. 77. मतद्विरेफपरिचुम्बितचारुपुष्प R. 6, 17. dicht anliegen an:
 मुक्ताकलापपरिचुम्बितचूचुकाया KĀURAP. 14.

— वि küssen: मुखं विचुम्बितुम् SĀH. D. 34, 4. 62, 5.

2. चुम्ब्, चुम्बयति verletzen, tödten DuātUP. 32, 91.

चुम्ब (von 1. चुम्ब्) m. das Küssen, Kuss TRIK. 3, 3, 97. चुम्बा f. dass.
 VARĀH. BRH. S. 77, 6. 8.

चुम्बक (wie eben) 1) adj. a) der viel küsst, = चुम्बनपर MED. k. 87.
 = कामुक H. an. 3, 41. — b) schelmisch, bühisch, = धूर्त H. an. MED.
 — c) belesen, = वङ्गग्रन्थैकदेशत MED. = वङ्गगुरु H. an. — 2) m.
 a) Magnet H. an. MED. PRAB. 108, 13. — b) Wagekloben (vgl. चुम्बिन्),
 = धटस्योर्ध्वावलम्बनम् MED.

चुम्बन (wie eben) n. das Küssen, Kuss VOP. 8, 75. 9, 39. PĀNĀT. 263,
 5. मन्त्रं समर्पय मर्पितचुम्बनं च AMAR. 94. VARĀH. BRH. S. 77, 4. चुम्बिता-
 शुम्बनैरपि SĀH. D. 33, 3. शनैर्विहितचुम्बनं नृपम् RĀGA-TAR. 3, 383. चु-
 म्बनदान Glt. 2, 16. am Ende eines adj. comp. f. आ 13.

चुम्बिन् (wie eben) adj. küssend so v. a. berührend, dicht anliegend
 an: धटस्तत्रचुम्बिनौ (अवलम्बौ) Z. d. d. m. G. 9, 667, 3. योनोन्नतस्त-
 नयुगोपरिचारुचुम्बिमुक्तावली KĀURAP. 17.

चुर, चौरयति (nach VOP. 17, 1 und Anderen auch चौरति) stehlen, sich
 zueignen DuātUP. 32, 1. यश्चाग्रं चोरयेद्भृक्त्वात् M. 8, 333. न ते वयं पुष्करं
 चोरयामः MBu. 13, 4560. चोरयित्वा 5497. fg. चोरयते VOP. MBu. 13, 5308.
 MĀRK. P. 13, 23. चोरित PĀNĀT. 97, 12 (चौ). DAČAK. in BENF. Chr. 193, 9.
 चोरयितव्यनिःस्पृहस्तथैव तावच्चोर्यमाणहृदयः ebend. 199, 9. कार्तिं हरे-
 शोरयताम् (घनानाम्) VARĀH. BRH. S. 24, 18. अचूचुरच्चन्द्रमसो ऽभिरामताम्
 ĆIC. 1, 16. bestehen: सर्वे चौरकुले जाताश्चोरयतः परस्परम् HARIV. 11146.

— Vgl. चोर, चौर.

चुर s. प्रचुर.

चुरण (von चुर) n. das Stehlen; davon चुरण्य, चुरण्यति stehlen gaṇa
 काण्डादि zu P. 3, 1, 27.